अभियान

उठो, नाचो, विरोध करो:
उमड़ते सौ करोड़ अभियान के अनेक रुख

पामेला फिलिपोज़

29 मार्च 1978 की रात। हैदराबाद में एक युवा महिला रमीज़ा बी. का तीन पुलिसकर्मियों ने सामूहिक बलात्कार किया। उसे बचाने की कोशिश करने पर उसके पति की हत्या कर दी गई। गुस्से में भड़के लोगों ने अगले दिन शहर में बंद घोषित कर दिया।

औरतों पर होने वाली हिंसा के उत्तरजीवियों की फेहरिस्त जुड़ने वाला एक और नाम है रमीज़ा बी। उसके साथ होने वाला घटना उन तमाम अनगिनत हिंसाओं का हिस्सा है जो अनचीन्ही रह जाती हैं, जिनका कोई हिसाब नहीं होता और जिनकी कोई सज़ा मुकर्रर नहीं की जाती— और जिनके ख़िलाफ़ पूरे देश की औरतें संघर्ष कर रही हैं।

आइए अब आगे बढ़ें— दिसम्बर 16, 2012— एक युवा लड़की, दिल्ली के एक सिनेमाघर से रात आठ बजे अपने पुरुष मित्र के साथ घर लौटने के लिए बस लेती है। उसके साथ सामूहिक बलात्कार किया जाता है। उसके साथी व उसको लोहे के सरिये से घायल करके अधमरी हालत में सड़क पर फैंक दिया जाता है।

क्या इन पैंतीस वर्षों में वाकई कुछ भी बदला है? औरतों के साथ हिंसा महिला आंदोलन और सक्रियता का एक प्रमुख मुद्दा रहा है और हैदराबाद घटना के पच्चीस सालों बाद आज भी हम उसी कगार पर खड़े हैं। विगत वर्षों में चाहे ऐसे अपराधों के ख़िलाफ़ आवाज़ों ने ज़ोर पकड़ा हो और प्रगतिशील क़ानून भी बनाए गए हों पर यह भी सच है कि औरतों के ख़िलाफ़ हिंसा के नए और वहशी रूप देश के असंख्यक कोनों से हमारे सामने आए हैं। *राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड शाखा* के आंकड़ों को देखें तो 1953-2011 के बीच भारत में बलात्कार की घटनाओं में 873 प्रतिशत बढ़त देखी गई है। देश की कड़वी सच्चाई बस इन्हीं आंकड़ों में स्पष्ट नज़र आती है।

पिछले कुछ महीनों में *उमड़ते सौ करोड़ अभियान* ने औरतों पर होने वाली हिंसा के मुद्दे को समस्त भारत— मदुरई से दिल्ली व मुंबई से भुवनेश्वर तक के इलाकों में एक बार फिर, एक नए तरीके जिसमें नए युवा कार्यकर्ताओं की रचनात्मकता व ऊर्जा और पुरानी नारीवादियों की दृढ़ प्रतिबद्धता का समावेश दिखाई पड़ता है, का आह्वान किया है।

इस अभियान की शुरूआत अमरीकी लेखिका व कार्यकर्ता, ईव एंसलर के विश्व स्तरीय उदघोष के साथ हुई जिसमें दुनिया के सभी स्त्री, पुरुष व बच्चों से 14 फरवरी 2013 को महिलाओं के ख़िलाफ़ हिंसा को जड़ से मिटाने के लिए साथ जुड़ने का ऐलान था। 161 देशों के लगभग पांच हज़ार समूहों ने इस विचार का समर्थन किया फिर चाहे वे फिलिपींस में खनन विरोध से जुड़े हों या बंगलादेश में तेज़ाबी हमलों की मुखालफ़त कर रहे हों अथवा यूके में नए क़ानूनों के लिए संघर्षरत हों।

उमड़ते सौ करोड़ अभियान की दक्षिण एशिया समन्वयक *संगत* संस्था की कमला भसीन का मानना है कि वैश्विक

अभियान बेहद महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि वे राष्ट्रीय अभियानों में ऊर्जा संचारित करते हैं। "मुझे लगता है कि अकेले मैं एक बूंद मात्र हूं। पर जब मैं किसी वैश्विक अभियान से जुड़ जाती हूं। तो एक महासागर का रूप ले लेती हूं। आओ हम सब मिलकर इस विचार को फैलाएं। अपने सभी रचनात्मक और सांस्कृतिक संसाधनों को एकजुट करके हिंसा का सामूहिक विरोध करें।"

दिलचस्प बात यह है कि विदेशी अभियानों से परहेज रखने वाले समूह भी इस विचार से सहमत हैं। *एनएफआईडब्लयू* की कार्यकारी अध्यक्षा गार्गी चक्रवर्ती कहती हैं "अब समय आ गया है कि सभी महिलाएं अपने अलगावों को छोड़कर कुछ चुनिंदा महत्वपूर्ण मुद्दों को मिलकर अपनाएं। *उमड़ते सौ करोड़ अभियान* एक ऐसी ही प्रक्रिया है फिर चाहे आप इसे संघर्ष कहें या जश्न का नाम दें।"

इस बात पर आम स्वीकृति है कि महिलाओं पर हिंसा और हमले फिर चाहे वे घर के भीतर हों या सार्वजनिक जगह पर हमारी मौजूदा सामाजिक संरचनाओं में सन्निहित हैं।

जहां गार्गी चक्रवर्ती का विचार है कि ग़रीबी अपने आप में ही एक संरचनात्मक हिंसा का रूप है वहीं *अखिल भारतीय दलित महिला मंच* की संयोजिका विमल थोरट का विश्वास है कि *उमड़ते सौ करोड़* जैसे अभियानों में जाति व्यवस्था द्वारा प्रतिपादित हिंसा को भी स्वीकार किया जाना चाहिए। वे उल्लेखित करती हैं, "हरियाणा के मिर्चपुर मामले को ही ले लें जहां 2010 में एक 70 वर्षीय दलित पुरुष और उसकी विकलांग बेटी को ज़िंदा जला दिया गया था। यह सब तब शुरू हुआ जब दलित परिवार के पालतू कुत्ते को सवर्णों ने मार डाला। दलित परिवार के विरोध जताने पर स्थानीय जाट समुदाय ने पूरी दलित बस्ती को आग लगा दी। भारत में हम आज भी इसी तरह की हिंसाओं का सामना करते हैं जिनमें औरतें सबसे कमज़ोर लक्ष्य मानी जाती हैं।"

औरतों को कमज़ोर लक्ष्य समझे जाने का एक दहला देने वाला वाकया जुलाई 9, 2012 की घटना में देखने को मिला जब पब से बाहर निकल रही युवती को गुवाहाटी की सड़क पर लड़कों के एक गुट ने हमला बोल दिया। इस घटना को याद करते हुए *नार्थ-ईस्ट नेटवर्क* की अध्यक्षा मोनिषा बहल कहती हैं, "पूर्वोत्तर राज्यों में बसने वाली हम महिलाओं के लिए, जो कई दशकों से हिंसा पर काम कर रही हैं यह घटना बेहद तकलीफ़ देने वाली थी क्योंकि इस वारदात ने यह दर्शाया कि असम की महिलाओं के लिए सार्वजनिक जीवन में कोई जगह नहीं है। इसलिए हमें एक साथ आकर कहना होगा बस, अब और नहीं।"

'बहुत हुआ' जहांगीरपुरी दिल्ली की पुनर्वास बस्ती में रहने वाली बवरी देवी जो *एक्शन इण्डिया* की कार्यकर्ता है का भी कहना है। "मैं राजस्थान से आई पलायित महिला हूं। हम दिल्ली आकर इस पुनर्वास बस्ती में बस गए। इस शहर की हर गली में हिंसा की एक न एक दास्तान दर्ज है। आज हिंसा काफी विभिन्न रूप ले रही है और इसलिए हमें विविध तरीकों से इसका खात्मा करना होगा।"

भारत सरकार के *महिलाओं के राष्ट्रीय मिशन* की प्रमुख निदेशक रश्मि सिंह *उमड़ते सौ करोड़ अभियान* द्वारा चलाए एकजुटता प्रयासों को सराहते हुए कहती हैं, "यह विभिन्न पणधारियों को एक साथ लाने का प्रयास है और मुझे लगता है कि इस तस्वीर में सरकार को भी शामिल किया जाना चाहिए। सरकार को भी इस बात का एहसास होना ज़रूरी है कि महिलाओं के ख़िलाफ़ हिंसा प्रशासन का एक बेहद महत्वपूर्ण विषय है।"

उमड़ते सौ करोड़ अभियान की ख़ासियत यही है कि उसमें एक ऊर्जा का प्रवाह देखा जा सकता है जो उन युवाओं की उन्मुक्त देन है जो इससे जुड़े हैं। इन युवाओं ने नारे रचे हैं, ढोल पीटे हैं, लघु वृत्त चित्र व नृत्य बनाए हैं और इंटरनेट का रचनात्मक व प्रभावशाली तरीकों से इस्तेमाल किया है।

इस अभियान के दिल्ली लाँच के दौरान नवम्बर की एक सर्द शाम को गायिका-कार्यकर्ता विद्याशाह के गीत पर पूरा रंगभवन हाथ उठाकर झूमता-नाचता दिखाई दिया। उसी क्षण हिंसा के ख़िलाफ़ संघर्ष ने उसे जड़ से मिटाने की अभिलाषा का जश्न मनाने का रूप ले लिया था।

यूएन विमेन की क्षेत्रीय प्रोग्राम निदेशक ऐनी स्टेनहैमर का विश्वास है कि इस तरह के मज़बूत अभियानों में इस प्रकार के उमंग का होना बहुत ज़रूरी है। "मैं जंग के दौरान कोसोवो में थी। वहां मैंने एक अहम बात सीखीः चूंकि जंग से उजड़े इलाकों की बहाली अपने आप में ही लम्बी व थकाने प्रक्रिया वाली होती है लिहाज़ा इस पुनर्निमाण से जुड़े लोगों में जीने का उत्साह व नई स्फूर्ति होना आवश्यक है।"

'उठो, नाचो, विरोध करो' के अपने नारे के साथ जिसमें शरीर खुद विरोध का एक प्रतीक बन जाता है, यह अभियान औरतों के लिए एक हिंसा मुक्त भविष्य की रचना के साथ-साथ साझे पुल बनाने के प्रति भी बचनबद्ध है।

पामेला फिलिपोज़, *विमेंस फ़ीचर सर्विस, दिल्ली की निदेशक व वरिष्ठ पत्रकार हैं।*

साभारः मेनस्ट्रीम वाल्यूम-1 दिसम्बर 22, 2012